कक्षा-10

पान-फूल

भाग-2

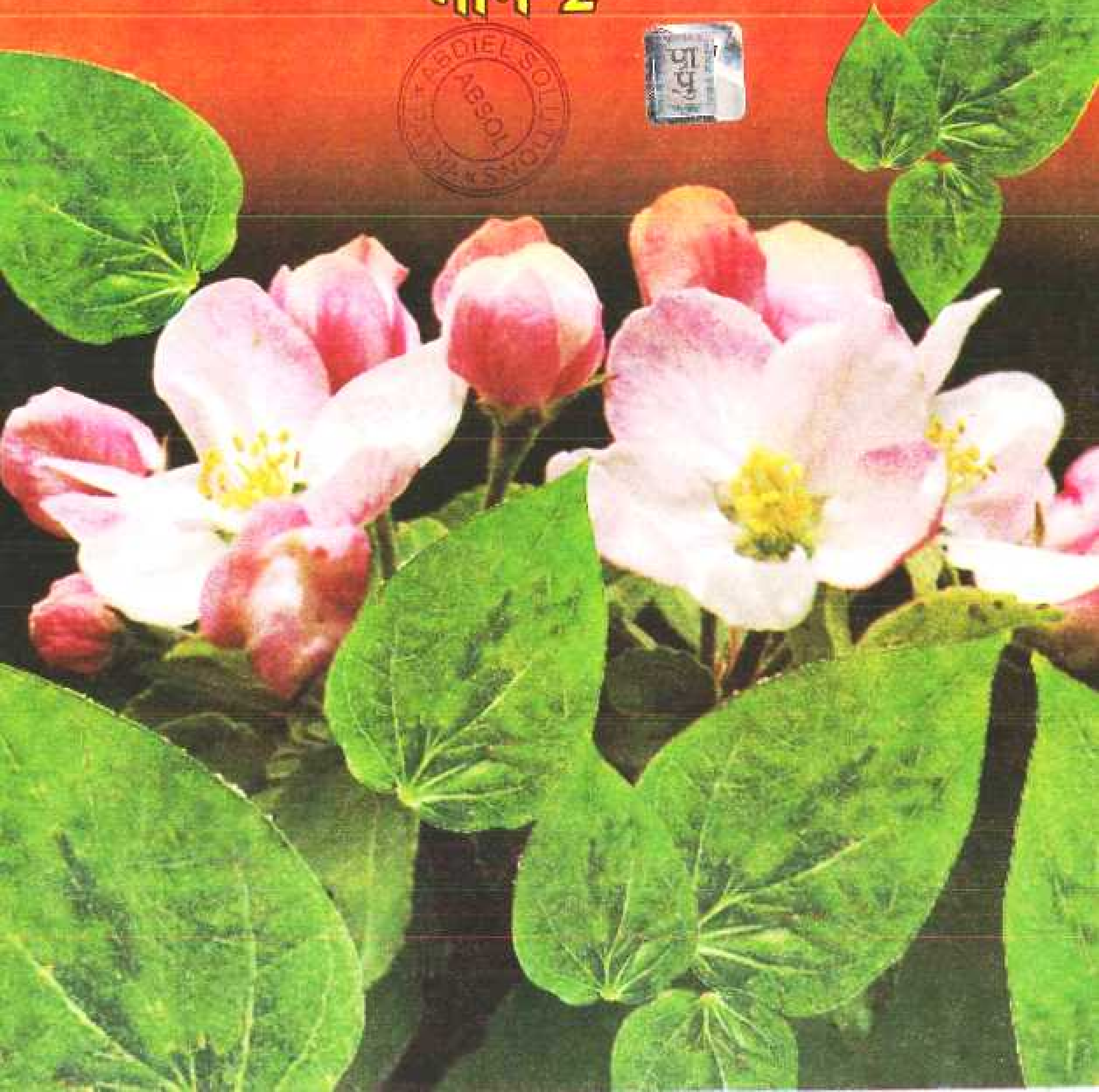

INDIAN ARMY

Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

Visit us at www.joinindianarmy.nic.in
or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861

Ser NO	Course	Vacancies Per Course	Age	Qualification	Appln to be received by	Training Academy	Duration of Training
1.	NDA	300	16½ - 19 Yrs	10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy	10 Nov & 10 Apr (by UPSC)	NDA Pune	3 Yrs + 1 yr at IMA
2.	10+2 (TES) Tech Entry Scheme	85	16½ - 19½ Yrs	10+2 (PCM) (aggregate 70% and above)	30 Jun & 31 Oct	IMA Dehradun	5 Yrs
3.	IMA(DE)	250	19 - 24 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	IMA Dehradun	1½ Yrs
4.	SSC (NT) (Men)	175	19 - 25 Yrs	Graduation	May & Oct (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
5.	SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry)	As notified	19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG	Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB	Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC)	OTA Chennai	49 Weeks
6.	NCC (SPL) (Men)	50	19 - 25 Yrs	Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade)	Oct/ Nov & Apr/ May	OTA Chennai	49 Weeks
	NCC (SPL) (Women)	As notified					
7.	JAG (Men)	As notified	21 - 27 Yrs	Graduate with LLB/ LLM with 55% marks	Apr / May	OTA Chennai	49 Weeks
8.	UES	60	19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY)	BE/B Tech	31 Jul	IMA Dehradun	One Year
9.	TGC (Engineers)	As notified	20-27 Yrs	BE/ B Tech	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
10.	TGC (AEC)	As notified	23-27 Yrs	MA/ M Sc. in 1st or 2nd Div	Apr/ May & Oct/ Nov	IMA Dehradun	One Year
11.	SSC (T) (Men)	50	20-27 Yrs	Engg Degree	Apr/ May & Oct/ Nov	OTA Chennai	49 Weeks
12.	SSC (T) (Women)	As notified	20-27 Yrs	Engg Degree	Feb/ Mar & Jul/ Aug	OTA Chennai	49 Weeks

पान-फूल

(भाग-2)

कक्षा 10 के लिए पाठ्य पुस्तक

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

सत्यमेव जयते

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार के लिए निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2010-11

मूल्य : रु॰ 23.50

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा हाई स्पीड ऑफसेट, ए-25 अभियंता नगर, पटना-800 025 द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित ।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा **IX** हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इसी क्रम में शैक्षिक सत्र 2010 के लिए वर्ग **I,III,VI** एवं **X** की सभी भाषायी एवं गैर-भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग **X** की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग **I,III,VI** तथा **X** की सभी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही हैं।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार; मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

श्री बसंत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेड के सफल प्रयास एवं सहयोग का आभारी हूँ, जिन्होंने दल-भावना के अनुरूप कार्यों का संपादन कराया है।

बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

16/11/09

आशुतोष, भा०व०से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम लि०

संरक्षण :

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना
- **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक, (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना
- **डॉ० कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

भोजपुरी पाठ्यपुस्तक विकास समिति

समन्वयक	:	डॉ० सुरेन्द्र कुमार	व्याख्याता (बि०शि० सेवा) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
		इम्तियाज आलम	व्याख्याता, शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
सदस्य	:	प्रो० ब्रजकिशोर	संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना
		श्री कृष्णानंद कृष्ण	कथाकार
		डॉ० गुरूचरण सिंह	हिन्दी विभाग, एस० पी० जैन महाविद्यालय, सासाराम
		डा० तैय्यैब हुसैन	सेवा निवृत, प्रोफेसर जेड०ए०आई० कॉलेज, सीवान
		डॉ० महामाया प्रसाद विनोद	पूर्व प्राचार्य, उच्च विद्यालय अमनौर, सारण
		डॉ० जीतेन्द्र वर्मा	सह संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना
		डॉ० रवीन्द्र कुमार शाहाबादी	व्याख्याता, स्नातकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा
		डॉ० सुभाष कुमार सिंह	व्याख्याता, आलमा इकबाल कॉलेज, बिहार शरीफ, नालन्दा
		श्रीमति प्रियवंदा मिश्र	लेखिका
समीक्षक	:	डा० शंकर प्रसाद	प्राध्यापक (सेवानिवृत) पटना विश्वविद्यालय, पटना
		डा० लालबाबू तिवारी	पटना हाई स्कूल, गर्दनीबाग, पटना

आमुख

दसवा वर्ग के भोजपुरी पाठ्य-पुस्तक 'पान-फूल, भाग-2' विचार -विमर्श के लमहर प्रक्रिया के उपलब्धि हवे । राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् , पटना द्वारा नवका पाठ्यक्रम बनावे के काम 2006 में शुरू भइल । एकरा खातिर कई गो कार्यशाला, सेमिनार आ गोष्ठी के आयोजन कइल गइल । एह में बिहार के खास-खास विशेषतन के ध्यान दिहल गइल । एकर अंतिम रूप 2008 में सामने आइल । एकरे परिप्रेक्ष्य में भोजपुरी के पाठ्यक्रम बनल जवना के आधार पर ई किताब सामने आइल । ई पहिला अवसर बा जब माध्यमिक स्तर पर भोजपुरी के पढ़ाई शुरू हो रहल बा।

एह किताब में दसवा के छात्रन के क्षमता के ध्यान रखल गइल बा। एकर उद्देश्य छात्रन के भाषाई अभिव्यक्ति के क्षमता के बढ़ावल, माँजल आ सोचे के दिशा के मानवीय दिशा दिहल बा। एह किताब के उद्देश्य लड़िकन में भाषा के अभिव्यक्ति के मेंही क्षमता से भी परिचित करावल बा ।

भोजपुरी कई करोड़ लोगन के मातृभाषा हवे । दुनिया के सभ महान शिक्षाशास्त्री लोग के मत बा कि सीखे आ अभिव्यक्ति खातिर मातृभाषा सबसे नीमन माध्यम बा । भोजपुरी भाषी लोग अबले अपना एह न्यायोचित्त अधिकार से वंचित रहल हवे । ई खुशी के बात बा कि भोजपुरिया लोग के आपन अधिकार मिल रहल बा ।

'पान-फूल, भाग-2' में ई कोशिश कइल गइल बा कि जन-जीवन से जुड़ल बातन के रोचक ढंग से साहित्य के विभिन्न विधन के माध्यम से परोसल जाव । एह किताब के पढ़ला से लड़िकन में अभिव्यक्ति के क्षमता के विकास होई। एह पाठ्य-पुस्तक में संकलित रचना के रचनाकार लोग के प्रति हम आभारी बानी ।

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति बड़ी मेहनत आ लगन से कई गो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठक में एकरा के तैयार कइलस । हम एह समिति के प्रति आभारी बानी । प्रो० ब्रजकिशोर, डा० जीतेन्द्र वर्मा, डा० तैयब हुसैन, डा० महामाया प्रसाद विनोद, कृष्णानंद कृष्ण, डा० गुरूचरण सिंह, डा० रवीन्द्र शाहाबादी, डा० सुभाष कुमार सिंह आ श्रीमती प्रियवंदा मिश्र रात-दिन एक क के एकरा के पूरा कइल । राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् , पटना के पदाधिकारी सभे एह किताब के नीमना ढंग से बनावे खातिर जीवे - जांगरे लागल रहे । एह सभ के सामूहिक प्रयास से ई किताब एतना बढ़िया रूप लिहलस। भाषा शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डा० कासीम खुरशीद, व्याख्याता इम्तियाज आलम एवं डा० सुरेन्द्र कुमार विशेष धन्यवाद के पात्र बानी ।

हसन वारिस
निदेशक (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

बात पान-फूल के

पान-फूल, भाग-2 एगो सामूहिक प्रयास के देन हवे ।

नवका पाठ्यचर्या में सुझावल उद्देश्य आ मूल्यन के मद्देनजर पाठ्यक्रम बनावल गइल बा । एकरा खातिर राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् , पटना कई गो कार्यशाला आयोजित कइलस आ हमनियों कईगो अनौपचारिक बैठक में विचार-विमर्श कइनी ।

जीवन में भाषा के महत्त्व सर्वोपरि बा । भषो में मातृभाषा के महत्त्व सर्वविदित बा । मातृभाषा के महत्त्व हरदम बनल रही । भोजपुरी लगभग बीस करोड़ लोग के मातृभाषा बिया । एकरा में हर तरह के अभिव्यक्ति के क्षमता बा।

एह किताब में छात्रन के भोजपुरी भाषा के ज्ञान करावत ओकरा जन्मजात क्षमता के विकसित करे के प्रयास त कइले गइल बा । संगही छात्रन के मन में समता, स्वतंत्रता, देश-प्रेम, राष्ट्रीय एकता, आपसी सद्भाव जइसन भावन के भरे के प्रयत्नो कइल बा । एह किताब का माध्यम से छात्रन में वैचारिक भाव विकसित करे का संगे-संगे ओकरा भाषिक क्षमता आ बौद्धिक क्षमता के मजबूत करे के कोशिश भइल बा ।

भोजपुरी के भाषाई नीति तय करे खातिर हमनी कई गो औपचारिक आ अनौपचारिक बैठक कइनी । पर्याप्त विचार-विमर्श का बाद हमनी सभे तय कइनी कि " भोजपुरी अब भाषा के रूप ले चुकल बिया । अब ई विचार आ शास्त्र के भाषा बन चुकल बिया । जल्दीए शासन-प्रशासन, ज्ञान-विज्ञान आदि के भी भाषा बनी । अइसन स्थिति में एकरा खातिर देवनागरी लिपि के कवनो अक्षर, संयुक्ताक्षर चाहे मात्रा के छोड़ल ठीक ना होई, ताकि अभिव्यक्ति में कवनो कठिनाई ना होखे ।

जवना चीज खातिर भोजपुरी में शब्द बा निःसंदेह ओकरा के अपनावे के चाही बाकिर हिंदी, अंग्रेजी आ आउरो कवनो भाषा के शब्दन के भोजपुरियावे के फेर में ओकर वर्तनी बिगाड़ल ठीक नइखे । जरूरत पड़ला पर दोसरा भाषा के शब्दन के बेहिचक अपनावे के चाहीं । एह से

भोजपुरी समृद्ध होई । बंगला, मैथिली इहे कइले बा । एह से भोजपुरी के विकास होई । अंग्रेजी के समृद्धि के एगो बड़हन वजह इहो बा कि ऊ अपना जरूरत के मुताबिक कवनो भाषा के शब्दन के अपना लेले । शुद्धतावादी दृष्टिकोण से कवनो भाषा के नुकसाने होला । हमनी के खाँटी भोजपुरी के आग्रह से बचे के चाहीं । जब भोजपुरी के हर तरह के अभिव्यक्ति के भाषा बनावे के बा, त मुख सुख, स्थानीय प्रयोग आदि के आग्रह से ऊपर उठे के होई । अंग्रेजी, हिंदी सहित दुनिया के सब भषन के स्थानीय रूप बावे बाकिर ओह हिसाब से लिखल ना जाला । बोली आ भाषा में हमेशा अंतर रहेला ।

चूँकि भाषा सामाजिक संपत्ति हवे, ई समाज में जनम लेले आ समाजे में विकसित होले । एह से समाज में आइल बदलाव के हिसाब से भोजपुरी के ढाले के पड़ी । एह घड़ी कई एकगो वजह से एक जगे से दोसरा जगे के आवागछ, संपर्क बढ़ रहल बा । एकर प्रभाव भाषा पर भी पड़ रहल बा । एकरा के सहेज मन से स्वीकारे के चाही ।

भाषा में बदलाव होत रहेला । दुनिया के सब भषन में अइसन होला । एकर बहुत सा वजह बा । एकरा के रोकल नइखे जा सकत । भोजपुरी में जवन बदलाव आ रहल बा ओकर स्वागत करे के चाही । हरेक भाषा के एगो ग्राम्य रूप (Cocknex) आ एगो शिष्ट रूप होला । अब भोजपुरी खाली गँवई लोग के भाषा नइखे रह गइल ।''

भोजपुरी के संत साहित्य बड़ी समृद्ध बा। जइसे कृष्ण भक्ति साहित्य के भाषा ब्रजभाषा आ तुलसी भक्ति साहित्य के भाषा अवधी रहल बा वइसही संत साहित्य के भाषा भोजपुरी हवे । संत शिवनारायण एगो महान संत रहीं । समाज में धर्म के नाँव पर फइलल कुरीतियन पर उहाँ के प्रहार कइलीं ।

भोजपुरी सगरी दुनिया में फइलल बिया । हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप विकसित करे के पीछे भोजपुरी के लमहर हाथ बा । कई गो देशन में भोजपुरिया लोग बड़हन संख्या में बा । 'सगरे जहान भोजपुरिया' एकांकी भोजपुरी के विराट स्वरूप के उजागर करता ।

संत परंपरा में पलटू दास के नाँव अमर बा । इहाँ के पद समाज में फइलल विकृतियन के दूर करे के प्रेरणा देता । 'बाएन' कहानी एड्स के भयावहता से परिचित करावता । भारत-रत्न डा० भीमराव अंबेडकर के जीवन सभका खातिर प्रेरणा से भरल बा । आधुनिक भारत के निर्माण में उहाँ के महान योगदान बा । उहाँ के जीवन यात्रा छात्र लोग के सही राह देखावता ।

भोजपुरी में अनुवाद कार्य खूब हो रहल बा । एह भाषा में हर तरह के विचारन के अभिव्यक्ति के क्षमता बा। इहे वजह बा कि मलयालम के प्रसिद्ध कथाकार तकषी शिवशंकर पिल्लै के कहानी 'मत्तन के कहानी' के अनुवाद भोजपुरिया टोन में भइल बा । ई कहानी शोषित समाज के प्रति करूणा जगावता । आजादी के लड़ाई में भोजपुरिया लोग के बड़हन योगदान रहल बा । सन् 1765 में अंग्रेजन के खिलाफ़ लड़े वाला फतेहशाही के शौर्य गाथा भोजपुरी के स्थापित कवि कुलदीपनारायण झड़प प्रस्तुत कर रहल बानी ।

भोजपुरिया संस्कृति हर तरह से संपन्न रहल बा । एजवाँ खेलकूद के शानदार परंपरा रहबा। कबड्डी एजवाँ के एगो लोकप्रिय खेल ह । 'कबड्डी' कहानी में एह खेल का बारे में रोचक ढंग से बतावल बा ।

पुस्तक में जगलाल चौधरी के जीवनी शामिल कइल गइल बा । उहाँ के अगिला पंक्ति के स्वतंत्रता सेनानी रहीं। आधुनिक बिहार के निर्माण में उहाँ के उल्लेखनीय योगदान बा। उहाँ के जीवन-यात्रा ई बतावता कि प्रजातांत्रिक भारत में सभका ई अवसर प्राप्त बा कि ऊ अपना मेहनत आ लगन से ऊँच-से-ऊँच पद पर पहुँच सकता ।

अमृता प्रीतम पंजाबी के प्रसिद्ध कवयित्री रहीं। नारी मुक्ति के विषय बना के लिखल उहाँ के कविता 'वारिसशाह से' के अनुवाद दिहल बा ।

एह घड़ी भोजपुरी सिनेमा में आइल बूम से सभे परिचित बा । सिनेमा कला माध्यमन में सबसे बेसी प्रभावशाली बा । 'भोजपुरी सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर' शीर्षक लेख भोजपुरी सिनेमा के उद्भव आ विकास पर प्रकाश डालता।

'बेयालिस के साथी' शीर्षक कविता एगो स्वतंत्रता सेनानी रमाकांत द्विवेदी रमता जी के लिखल बा । ई कविता देश प्रेम के भाव जगावता। कविवर सत्यनारायण लाल के कविता 'उहो बरखा आई' प्रकृति के मनोहारी दृश्य उरेहता। एह से छात्रन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ी । गोरख पाण्डेय के गीत 'नेह के पाती' श्रम के महत्ता बतावता । रमेशचन्द्र झा के कविता 'आग पर तप रहल जिन्दगी' आधुनिक भाव बोध से भरल बा ।

'भोजपुरी लोकनाट्य आ डोमकच' शीर्षक निबंध भोजपुरिया क्षेत्र के पारंपरिक सांस्कृतिक समृद्धि के दर्शावता । भोजपुरिया संस्कृति के जड़ बड़ा गहिर बा – ई बात एह निबंध से पता चलता ।

आज भोजपुरी हर तरह के अभिव्यक्ति के माध्यम बन रहल बिया । एह में रोजी-रोजगार के संभावना बन रहल बा । फिल्म आ आउर इलेक्ट्रानिक माध्यमन (चैनल, इंटननेट, ब्लाग, विज्ञापन आदि) में बिना कवनो सरंक्षण के एकर खूब चलल बा । एही बात के ध्यान में रख के पुस्तक के अंतिम अध्याय प्रयोजनमूलक भोजपुरी पर केन्द्रित कइल गइल बा ।

पुस्तक के नाँव 'पान-फूल' भोजपुरी माटी के सोन्ह महक लेले बा । भोजपुरिया क्षेत्र में पान-फूल के सांस्कृतिक महत्त्व रहल बा ।

ई पहिला अवसर बा जब दसवाँ कक्षा में भोजपुरी पढ़ावल जाता । एकरा पहिले ई इंटर आ विश्वविद्यालयन में पढ़ावल जात रहे ।

भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
पटना, बिहार

सूची

क्रम	शीर्षक		लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	विषय वासना .... पद सुन सुन....		संत शिवनारायण	1-5
2.	सगरे जहान भोजपुरिया	(एकांकी)		6-13
3.	साधो भाई .... पद		संत पलटूदास	14-17
4.	बाएन	(कहानी)	विशुद्धानंद	18-27
5.	पतेहबहादुर शाही	(कविता)	कुलदीप नारायण झड़प	28-33
6.	भारत रत्न डा० भीमराव अम्बेडकर	(जीवनी)		34-38
बाएन				
7.	मत्तन के कहानी	(कहानी)	तकषी शिवशंकर पिल्लै	39-56
8.	उहो बरखा आई	(कविता)	सत्यनारायण लाल	57-60
9.	जग के लाल : जगलाल	(जीवनी)	जगलाल चौधरी	61-67
बाएन				
10.	वारिसशाह से	(कविता)	अमृता प्रीतम	68-73
11.	बेयालिस के साथी	(कविता)	रमाकांत द्विवेदी रमता	74-79
12.	भोजपुरी सिनेमा : लोकप्रियता के शिखर पर	(निबंध)		80-85
13.	नेह के पाती	(कविता)	गोरख पाण्डेय	86-90
14.	कबड्डी	(कहानी)		91-96
15.	आग पर तप रहल जिन्दगी	(कविता)	रमेशचन्द्र झा	97-101
16.	भोजपुरी लोकनाट्य आ डोमकच	(निबंध)		102-107

व्याकरण आ रचना 10[illegible]-131

वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

ABDIEL SOLUTIONS ADSOL PATNA

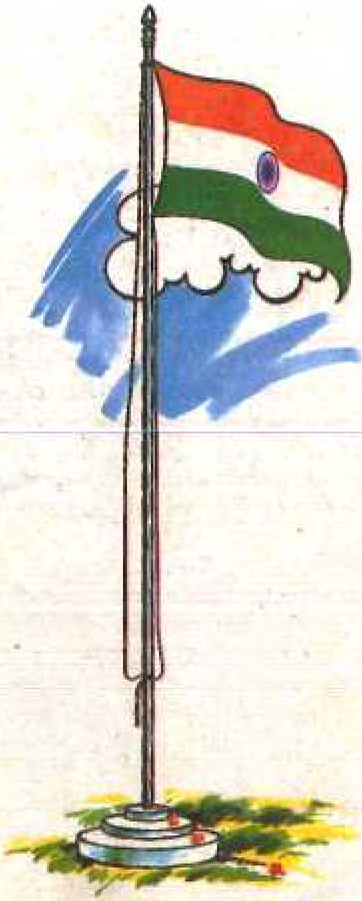

राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : शिल्पा प्रिंटिंग वर्क्स, महेन्द्रू, पटना–6